www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ 1000
वार्षिक शुल्क ₹ 100
विदेश में ५० डालर प्र.वर्ष एक प्रति ₹ 2.00

● वर्ष ११६ ● अंक : ४२–४३ ● १७ व २४ दिसम्बर, २०१३ मंगलवार मार्गशीर्ष पूर्णिमा व पौष कृष्ण सप्तमी सम्वत् २०७० ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११४

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से हम देशहित जीवन जीने का प्रण करें।

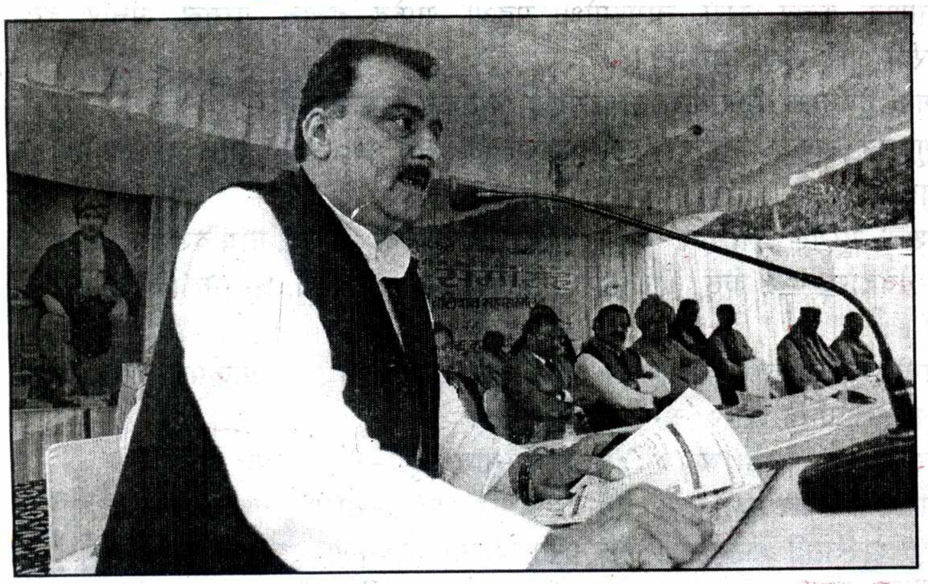

आर्य समाज नोयडा आर्ष गुरूकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोयडा गौतम बुद्ध नगर के वार्षिक उत्सव में दिनांक २२.१२.१३ को प्रातः ७ से ६ बजे तक विश्व शान्ति सोहार्द महायज्ञ १०१ यज्ञ कुण्डों पर सम्पन्न हुआ। ६:३० से १:३० बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप मे श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने भाग लिया और अपने उद्बोधन में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बहुयामी व्यक्तित्व का चित्रण करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनके सभी कार्यों को सम्पूर्णता देने के लिए अपना बलिदान दिया। देश में जन जन में भ्रातृत्व और समत्व का भाव जागृत करने के लिए हिन्दू मुस्लिम इसाई सभी को एक मंच पर एकत्रित होकर भारत के स्वाधीन बनाने का मार्ग प्रशस्त किया तो वहीं विदेशी शिक्षा को राष्ट्रीय जन मानस को सदैव पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े रहने का सूत्र मानकर वैदिक शिक्षा पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की जहां से अधीत स्नातकों ने देश को स्वतंत्र कराने में अपना सर्वस्वार्पण किया। स्वामी जी ने दूसरे को जो करने को कहा पहले स्वयं उसे अपनाया गुरूकुल में सर्व प्रथम अपने दोनों पुत्र श्री हरिश्चन्द्र एवं इन्द्र जी को प्रविष्ट कराया। अपनी सारी सम्पत्ति गुरूकुल निर्माण व संवार में आहूत कर दी। गुरूकुल के ब्रह्मचारियों में राष्ट्र भक्ति का सृजन अपने राष्ट्र के लिए समर्पित जीवन दर्शन से कराया। जब महात्मा गान्धी ने मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनायी तो उन्होंने शुद्धि आन्दोलन चलाकर सहस्रों स्त्री पुरूषों बच्चों को वैदिक धर्म से जोड़ा। उन्होंने अपनी अन्तिम श्वास तक राष्ट्रोन्नति के लिए समग्र उपाय किये और अन्त में २३ दिसम्बर, १६२६ अब्दुल रशीद नामक दिग्भ्रमित मुसलमान की गोली के शिकार बन कर शहीद हो गये। हम सभी को उनके इस बलिदान दिवस पर उनके राष्ट्र और मानवता के लिए समर्पित जीवन से शिक्षा लेनी है। जब हम उनके आदर्श जीवन के कृतित्व को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेंगे तो निश्चय ही हम राष्ट्र को उत्तम राष्ट्र बनाने में समर्थ होगें। इसके अतिरिक्त सभी वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बहुयायी जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला और तदनुरूप जीवन शैली बनाकर राष्ट्रोत्थान में योगदायी बनने का सन्देश दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. जयेन्द्र कुमार ने किया।

इस सममेलन के मुख्य अतिथि डॉ० अशोक कुमार चौहान (फाउन्डर प्रेसिडेंट एमिटी शिक्षण संस्थायें) थे।

मुख्य वक्ता डॉ. शशि प्रभा कुमार, ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, स्वामी शिवानन्द सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री, प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री तथा विशिष्ट अतिथि श्री आनन्द चौहान (ए.के.सी. ग्रुप आफ कम्पनीज़) श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., श्री छत्रपति रंजीत राय (मैनेजिंग डायरेक्टर सी एण्ड आर टेक्सटाइल्स प्रा. लि., डॉ. डी के गर्ग चेयर मैन ईशान शिक्षण संस्थान आदि थे।

(वार्षिकोत्सव का शेष विवरण

वेदामृतम्

ओ३म् एतास्ते अग्ने समिधः। त्वमिद्ध समिद्भव
आयुरस्मासु धेहि अमृतत्व माचार्याय।

अर्थ– (अग्ने) हे यज्ञाग्नि (एताः) ये (ते) तेरे लिए (समिधः) समिधायें हैं इनसे (त्वं) तू (इत) निश्चय ही (सम् इद्धः) संदीप्त (भव) हो (अस्मासु) हमारी इन समिधाओं से (इत्) निश्चय ही (समृइद्ध) संदीप्त (भव) हो (अस्मासू) हम ब्रह्मचारियों में (आयुः) जीवन और (आचार्याय) आचार्य के लिए (अमृतत्वम्) अमरता (धेहि) प्रदान कर।

अर्थ–मैं समित्याणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने, विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूंगा। समिधाओं को एक एक कर अग्नि में आहूति दूँगा।

भावार्थ– हे गुरूकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि जहां तू हमें जीवन प्रदान करेगी वहीं हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम तुझ अग्नि में तप कर ऐसे जीवन के धनी बने कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्य निष्ठ कर्मी देखकर पूछेगा कि तुम किस आचार्य के शिष्य हो तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम आचार्य के नाम को अगर किंचित् मात्र भी अमर करने के कारण बन सकेंगे तो हम अपने को धन्य मानेंगे।

–डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आर्यजगत् के विद्वान का अमर बलिदान

गुरूकुल साधु आश्रम अलीगढ़ के प्राचार्य बुद्धदेव जी व्याकरण साहित्य–आयुर्वेद–विज्ञान एवं वेदों के विद्वान थे। आप आजीवन ब्रह्मचारी रहकर गुरूकुल में साधना करते हुए सारी व्यवस्थाओं का विधिवत् संचालन करते थे गुरूकुल जो बीच में प्रायः सुप्त हो गया था उसे नवजीवन प्रदान किया और क्षेत्र में आर्यवीर दल के तथा आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु उत्साह पूर्वक जाते थे, उनके प्रवचन से लोग बड़े लाभांन्वित होते थे–सायंकाल भ्रमण समय कुछ असामाजिक व्यक्तियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी और उनको अपने ऊपर कलंक का टीका लगा लिया और हमसे एक विद्वान को छीन लिया इससे गुरूकुल परिवार की अपूरणीय क्षति हुई है। गुरूकुल परिवार में उनका वैदिक संस्कार किया गया और शोक सभा आयोजित की गई जिसमें आचार्य प्रेमपाल जी शास्त्री दिल्ली–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मन्त्री प्रतिनिधि सभा–दयाशंकर आर्य मंत्री जिला–सम्भल रामवीर शास्त्री बबराला आचार्य श्यामलाल जी गुरूकुल पूठ–स्वामी लक्ष्मणानन्द जी गु० गँगीरी आचार्या पवित्रा जी कन्या गुरूकुल सासनी आचार्याधारणा जी कन्या गुरूकुल शिवगंज राज, आचार्य रघुराज जी गुरूकुल राजघाट ब्रह्मदेव शास्त्री अलीगढ़ देवनारायण भारद्वाज अलीगढ़ आचार्य विनय विद्यालंकार आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तराखण्ड आचार्य चैतन्यदेव जी गुरूकुल मैयाचावड़ आदि–आदि विद्वानों एवं जिलासभा के अधिकारियों ने उनके संस्मरण सुनाये और श्रृद्धाञ्जलि दी इससे पूर्व यज्ञशाला में शान्तियज्ञ किया गया जिसमें सभी ने आहुतियाँ लगाई। आर्यप्रतिनिधि सभा उपप्रधान नरेन्द्र चौ० बु०शहर ने भी वहाँ सान्तावना प्रकट की तथा मौन रहकर आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई मै सभी विद्वज्जनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ आपने हमारा मनोबल बढ़ाया है – भवदीय – जीवन सिंह आचार्य, गुरूकुल साधु आश्रम अलीगढ़।

लखनऊ में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

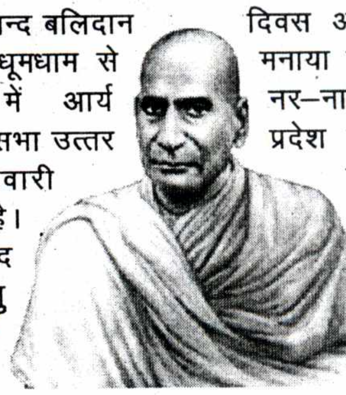

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ की ओर से दिनांक २३ दिसम्बर, २०१३ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य समाज लाजपत नगर चौक में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में आर्य नर–नारियों ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान श्री मनमोहन तिवारी की उपस्थिति उल्लेखनीय है। यह बलिदान दिवस प्रतिवर्ष शहीद स्मारक पर मनाया जाता था परन्तु इस वर्ष जिलाधिकारी की स्वीकृति न मिलने से स्थान बदलना पड़ा।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

समलैंगिक सम्बन्ध व्यभिचार है-यह मानव सृष्टि के विनाश का मार्ग है।

कुछ समय पूर्व उच्च न्यायालय ने समलैंगिक सम्बन्ध को मान्यता देने का निर्णय दिया था। जिसके विरूद्ध सर्वोच्च न्यायालय में अपील की गयी। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में समलैंगिक सम्बन्ध को अपराध मानकर उच्च न्यायालय के निर्णय को निरस्त कर दिया। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद समलैंगिक सम्बन्धों को स्थापित करने वालों ने उस निर्णय के विरूद्ध संगठित रूप में हो हल्ला मचाना प्रारम्भ किया। इस हल्ले से घबराकर कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने उस अनैतिकता के पोषक समुदाय के वोट बैंक के लालच में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरूद्ध और समलैंगिकता को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए अध्यादेश लाने की घोषणा कर दी। परन्तु सौभाग्य रहा कि कांग्रेस के अन्दर नैतिक मूल्यों की रक्षा की सुगबुगाहट के कारण गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे ने ऐसे किसी भी अध्यादेश के न बनाये जाने की घोषणा करके देश हित का कार्य किया।

परमात्मा ने सृष्टि की संरचना जीव मात्र के कल्याण के लिए की है। तो जीवात्माओं के पूर्व कृत कर्मों के आधार पर उन्हें अनेक प्रकार के शरीर दिये। मनुष्य शरीर धारी आत्मा को कर्म करने की स्वतंत्रता दी तथा कर्म फल देना अपने हाथ में रखा। मनुष्येत्तर प्राणियों के कर्म उनके पूर्वकृत कर्मो के भोग के रूप में दिये। सभी प्राणियों में सृष्टि व्यवस्था को सही रखने के लिए स्त्री व पुल्लिंग का भेद दिया। शारीरिक रचना में सन्तानोत्पत्ति के लिए कुछ भेद रखा। सन्तानोत्पत्ति के हेतु सभी प्राणियों में शारीरिक सम्बन्ध बनाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति दी। मनुष्येत्तर सभी प्राणी उसी ईश्वर के नियमानुसार आपस में शारीरिक सम्बन्ध केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए करते हैं। मनुष्येत्तर कोई भी प्राणी समलैंगिक सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा कभी नहीं करते।

मनुष्य को परमात्मा ने कर्म करने की स्वतंत्रता दी और कर्म विकर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान दिया जो सृष्टि का सम्विधान है। जिसके आधार पर मनुष्य प्राणी की आयु औसतन १०० वर्ष की मानकर ४ आश्रमों क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम में विभक्त करके उन आश्रमों के कर्त्तव्यों का निर्धारण हमारे पूर्वज ऋषि मुनियो ने करते हुये कहा कि प्रारम्भ के २५ वर्ष पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुये सम्पूर्ण विद्या के अध्ययन में लगें। ब्रह्मचर्य काल में प्रारम्भिक उपदेश में कहा गया 'मरणं बिन्दुपातेन जीवनं विन्दु धारणात्' ब्रह्मचर्याश्रम में वीर्य का एक भी बिन्दु नष्ट करना मृत्यु का कारक है। शरीर विज्ञान में लगभग १०-१२ वर्ष की अवस्था में पुरुष और स्त्री में रक्त से निर्मित उस ओज शक्ति (वीर्य) या रज का स्थापन का ज्ञान होने लगता है। रक्त के सर्वाश से कुछ अंश उस वीर्य या रज शक्ति का बनता है। पुरुष लिंग में उस शक्ति को वीर्य और स्त्री लिंग में उसे रजनाम से व्याख्यायित करके उसकी पूर्ण संरक्षा का गुरूजन उपदेश करते हैं। २५ वर्ष की आयु तक विद्यार्जन करके लड़के और लड़कियों को विवाह के बन्धन में बांधने का नियम है। जहां वे माता और पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं परन्तु इस आश्रम में भी इन्द्रिय संयम की शिक्षा विवाह संस्कार में दी जाती है। फिर ५० वर्ष की अवस्था के बाद घर का सारा दायित्व सन्तानों को सौंप कर वानप्रस्थ आश्रम की व्यवस्था की गयी है जिसमें पुनः पूर्ण इन्द्रिय संयम की ही साधना का विधान है इन तीनों आश्रमों को मर्यादानुसार उत्तम जीवन प्राप्त करके अनुभवी वृद्ध सन्यासाश्रम में प्रविष्ट होकर उनके गांव गांव घर घर अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर सुजीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करने की व्यवस्था है।

पाश्चात्य जीवन शैली भोगवादी है जो वेद ज्ञान से दूर जाने के कारण हो गयी। फलतः यह जीवन का सुमार्ग उनकी भोगवादी जीवन धारा में न रचा और उन्होंने अपने जीवन को मनमानी केवल इन्द्रिय सुख के भोग की इच्छा में डाल लिया। संसार की जिम्मेदारियों को स्वीकार करने में असमर्थ मना समलैंगिक सम्बन्ध बनाने लगे। यह रोग धीरे- धीरे सारे विश्व में फैलने लगा। कई देशों ने गूढ़ता अज्ञानता के वशीभूत इसे संवैधानिक दर्जा दे डाला। हमारे देश में इसको संवैधानिक दर्जा दिलाने की उन मनचलों ने आवाजें उठानी शुरू कर दीं।

वैदिक दर्शन में समलैंगिक सम्बद्ध को व्यभिचार कहा है। व्यभिचार अर्थात् न करने योग्य कार्य कहा है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार ऐसे सम्बन्ध बनाने वालों की इन्द्रियाँ कमजोर होकर सन्तानोत्पत्ति के अयोग्य हो जाती है। मधुमेह रोग जिसे आज की भाषा में डायबिटीज कहते है उसकी शरीर में उत्पत्ति हो जाती है जो मनुष्य को मृत्यु की ओर जल्दी से जल्दी घसीटता जाता है। यदि पश्चिमी हवा के बहाव में हमने भी अपना योगदान प्रारम्भ किया तो निश्चय ही हमारे युवक युवतियां नपुंसक असाध्य रोगी बनकर दुनिया के लिये भार स्वरूप हो जायेंगे और इसमें अतिशयोक्ति न होगी कि धीरे धीरे मानव जाति ही लुप्त प्राय हो जायेगी।

अतः सभी देश के प्रबुद्ध चेता नागरिक, विद्वान, राजनेता इस भयावह स्थिति से अपने राष्ट्र ही नहीं सारे विश्व को बचाने के लिए इस अनैतिक अप्राकृतिक समलैंगिक सम्बन्ध के विरूद्ध एकमत होकर प्रबल आवाज उठायें और लोक सभा में ऐसे अनैतिक सम्बन्ध को संवैधानिक बनाने के लिए नियम बनाने के प्रस्ताव ही न आ पाये। यदि किसी प्रकार प्रस्ताव आये तो उसका पूरी तरह से विरोध करके सर्वसम्मति बनाकर उसे पारित न होने दें। अभी अभी समाचार पत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय से उसके निर्णय पर पुनर्विचार का अनुरोध किया है। सम्पूर्ण सभ्य समाज सर्वोच्च न्यायालय से पुनर्विचार याचिका खारितज करने की प्रार्थना करें और सर्वोच्च न्यायालय उसे खारिज कर सही न्याय दें।

-सम्पादक

रोगानुसार हवन धूप

अंगारे पर एक चम्मच धूनिं सुबह-शाम

संकलनकर्ता : श्रीकृष्ण आर्य (बीमावाले) एम.डी.आर.टी

रोग हवन धूप

१. टाईफाइड नीम, चिरायता, पित्तापापड़ा, त्रिफला समभाग घी मिश्रित धूनि।

२. ज्वरनाशक अजवाईन की धूनि आग दें।

३. नजला, जुकाम, सिर दर्द मुनक्का की धूनि आग पर दें।

४. नेत्रज्योति वर्धक शहद की धूनि आग पर दें।

५. मस्तिष्क बलवर्धक शहद, सफेद चन्दन की धूनि आग पर दें।

६. वातरोग नाशक पिप्पली की धूनि आग पर दें।

७. मनोविकार नाशक गूग्गल और अपामार्ग की धूनि आग पर दें।

८. मधुमेह नाशक गूग्गल, लोभान, जामुन वृक्ष की छाल, करेले का डंठल सम्भाग की मिश्रित धूनि दें।

९. मानसिक उन्माद नाशक सीताफल के बीज और जटामासी चूर्ण की धूनी दें।

१०. चित्त भ्रम नाशक कचूर, खस, नागरमोथा महुआ, सफेद चन्दन, गूग्गल, अनार, बड़ी इलायची, नरवी और शहद सम्भाग।

११. पीलिया नाशक देवदारू, चिरायत, नागरमोंथा, कुटकी, वायड़िंग।

१२. क्षय नाशक गूग्गल, सफेद चन्दन, गिलोय वासा (अडूसा) १००-१०० ग्राम चूर्ण, कपूर ५० ग्राम, १०० ग्राम घी।

१३. मलेरिया नाशक गूग्गल, लोभान, कपूर, हल्दी, दारूहल्दी, अगर, वायविड्डग, बालछड़ (जटामासी), देवदारू, वच, कठू, अजवाईन, नीम पत्ते सम्भाग, चूर्ण, घी मिलाकर हवन करें तथा धूनि दें।

१४. सर्वरोगनाशिनी (अपराजित धूप) गूग्गल, वच, गन्ध, तृण, नीम पत्ते, आकपत्ते, अगर, राल, देवदारू, छिलका सहित मसूर, सम्भाग घी युक्त।

१५. संधिगत ज्वर नाशक (जोड़ों का दर्द) राल-सम्भाग, चूर्ण-घी, मिश्रित धूनि दें।

१६. निमोनिया नाशक पोहकर मूल, वच, लोभान, गूग्गल, अडूषा-सम्भाग चूर्ण घी मिश्रित धूनि दें

१७. जुकाम नाशक खुरसानी अजवाईन, जटामासी, पशमना कागज, लालबूरा, सम्भाग चूर्ण घी युक्त धूनि दें।

१८. पीनस (जुकाम का बिगड़ा रूप) बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, नीम पत्ते, वायविड्डग, सहजने की छाल-सम्भाग चूर्ण में, धूप का चूरा मिलाकर।

१९. श्वास-कास नाशक बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, वच, पोहकर मूल, अडूसा-पत्र-सम्भाग चूर्ण घी युक्त धूनि दें।

२०. सिर दर्द नाशक काले तिल और वायविड्डग चूर्ण घी युक्त धूनि दें।

२१. चेचक-खसरा नाशक मुलहटी, देवदारू, गंधाविरोजा, राल, गूग्गल, पीपल, कुलंजन कपूर, लोभान-सम्भाग घी धूनि दें।

२२. जिव्हा तालूरोग नाशक मुलहठी, देवदारू, गंधाविरोजा, राल, गूग्गल, पीपल, कुलंजन कपूर, लोभान-सम्भाग घी की धूनि दें।

२३. कैंसर नाशक-१. गूलर, छाल, २. गुलर फल, ३. अशोक छाल, ४. अर्जुन छाल, ५. अर्जुन छाल, लोध्र, ६. माजूफल, ७. दारूहल्दी, ८. हल्दी, ९. खोपरा, १०. तिल, ११. जों, १२. चिकनी सुपारी, १३. शतावर, १४. काकुजंघा, १५. मोचरस, १६. खस, १७. मंजीष्ठ, १८. अनार, दाना, १९. सफेद चन्दन, २०. लाल चन्दन, २१. गंधा विरोजा, २२. नरवी, २३. जामुन पत्ते, २४. घाय के पत्ते-सम्भाग चूर्ण में दस गुना शक्कर और एक गुना केसर से दिन में तीन बार हवन करें।

-साभार दीन मंगलयज्ञशाला के इतिहास से

महर्षि के जीवन की कुछ उपयोगी बातें

बरेली में बहुत दिनों तक व्याख्यान–वारि–वर्षा करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी आश्विन षदी ४ सं० १४३६ तदनुसार सन् १८६५ को शाहजहांपुर पधारे। विज्ञापनों द्वारा सबको विदित कर दिया कि धर्म–प्रेमी जन नियत समय पर आकर व्याख्यान श्रवण करें और लाभ उठावें। जिन्हें प्रश्न पूछने हो वे स्वामी जी के पास आकर अपनी शंकाओं का समाधान करायें और उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार कई बिन्दुओं पर व्याख्यान दिये।

१– सच्चा धर्म एक ही है – शाहजहांपुर में सत्य पर व्याख्यान देते हुए स्वामी जी ने कहा, "संसार में अनेक मत फैल रहे है। पन्थाइयों पर विश्वास कर जिज्ञासु के लिए सत्य का जानना कठिन है। जिससे पूछो वही अपने मन्थ को सच्चा और दूसरों को झूठा बताता है। इस पर स्वामी जी ने दृष्टान्त दिया कि एक जिज्ञासु किसी तत्वदर्शी पण्डित के पास जाकर कहने लगा कि महाराज! मुझे वह सच्चा धर्म बताइए, जिसके आराधन से मेरा कल्याण हो, मुझे परम धाम की उपलब्धि हो।

तत्वदर्शी महात्मा ने कहा – चलो आपको सद्धर्म का बोध करायें। वे उसे एक मतवादी के पास ले गये। उन्होंने उस मतवादी से पूछा कि "सत्य– धर्म कौन सा है?" उस पन्थाई पुरुष ने अपने मत की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और दूसरे मतों की निन्दा की। इस प्रकार वह जिज्ञासु सभी मतवादियों के पास गया। सभी अपने उठने–बैठने की रीति को, अपनी उपासना पद्धति को और अपने धर्म–मन्दिरों को धर्म कहते रहे। प्रत्येक ने अपने ही तीर्थों का यशगान किया। अपनी ही देव–मूर्तियों को उत्तम बताया। अपने ही धर्म चिन्हों को, बहिरंग साधनों को और अपने ही महापुरुषों के वाक्यों को "धर्म" प्रदर्शित किया और अपने से भिन्न मतों की प्रत्येक बात की भरपेट निन्दा की।

प्रत्येक मतवादी की नवीन धारणा नवीन पद्धति, नूतन धर्म चिन्ह, नई मूर्तियाँ और भिन्न–भिन्न तीर्थ देख व सुनकर, उस जिज्ञासु का जी घबरा उठा। मतवादियों के सघन निविड़ वन में फंस कर वह दिशा विमूढ़ हो गया। अन्त में वह तत्त्व दर्शी उसे एक अन्य महात्मा के पास ले गया उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनसे सच्चे धर्म की जिज्ञासा करने लगा। उस महात्मा ने जिज्ञासु से कहा, सत्य वह है जिसपर सब की एक सी साक्षी हो, जिसके सब कर्मो को सब मत–वादी स्वीकार करें, वही सच्चा धर्म है। उसी को मानों। किसी एक मत के आडम्बर में न फंसो। जिस धर्म में एक परमेश्वर पर विश्वास और उसकी उपासना, जैसा भाव और ज्ञान भीतर हो, उसी को वाणी द्वारा प्रकाश करना और उसी के अनुसार आचरण करना, जितेन्द्रिय रहना, किसी के अधिकार और वस्तु को न छीनना और निर्बलों व दीनों पर दया करना बताया जाता है, वही धर्म सर्वोत्तम है। ऐसा धर्म केवल वैदिक धर्म ही है और यही धर्म कल्याण कारी एवं मोक्षदाता है।

२– वेदों की पुनः स्थापना – एक दिन लक्ष्मण शास्त्री स्वामी जी के पास जाकर शास्त्रार्थ करने लगे। शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति–पूजन था। स्वामी जी ने शास्त्री जी को कहा कि अपने पक्ष के पोषण में आप कोई वेद का प्रमाण उपस्थित कीजिए। शास्त्री महाशय ने कहा कि वेद का प्रमाण कहाँ से दूं? वेद तो शंखासुर ने हरण कर लिए है। स्वामी जी ने तत्काल वेद हाथ में उठाकर कहा, पण्डित जी आपके आलस्य और प्रमाद रूपी शंखा सुर का वध करके ये वेद मैंने जर्मनी से मंगाये है। लीजिए इनमें से खोजकर कोई प्रमाण निकालिए। उस समय सारी सभा हास्य रस में लोट–पोट हो गई। पण्डित जी ने भी मौन साधन ही अच्छा समझा।

३– निर्भीक सन्यासी – महर्षि जी एक निर्भीक सन्यासी थे। कितना भी बड़ा मनुष्य कोई क्यों न हो, यदि वह कोई दबाव की बात कह बैठता तो स्वामी जी तुरन्त करारा उत्तर देकर उसका मुंह बन्द कर देते। एक दिन डिप्टी कलेक्टर, अली जान महाशय उस मार्ग से निकले जहां स्वामी जी व्याख्यान दिया करते थे। डिप्टी महाशय ने कहा कि पण्डित जी अपने व्याख्यान में कुछ सम्भल कर बोला कीजिए। स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया कि कोई भय की बात नहीं है, अब राज्य अंग्रेजी है, औरंगजेबी नहीं।

४– मितव्ययिता के प्रबल समर्थ – स्वामी जी को मितव्ययिता का भी सदा ध्यान रहता था। वे व्यर्थ व्यय के बड़े विरोधी थे। धन के सदुपयोग की सब को शिक्षा दिया करते थे। स्वामी जी को व्याख्यान – स्थान पर पहुँचाने के लिये जो सज्जन गाड़ी भेजा करता था। वह एक दिन अपनी गाड़ी न भेज सका। किराये की गाड़ी स्वामी जी के निवास स्थान पर आ गई। स्वामी जी ने उस गाड़ी को देखकर कहा, "आप किराए की गाड़ी क्यों लाये हैं? मुझे गाड़ी में बैठने का कोई व्यसन नहीं है। आने–जाने में अधिक समय न व्यय हो जाए इसलिए मैं गाड़ी में बैठता हूँ, वैसे तो मुझे पैरों के बल चलने ही में आनन्द आता है।

पण्डित भीमसेन जी एक दिन बाजार से भोजन – सामग्री लिवा लाए। स्वामी जी ने भोज्य–पदार्थो का निरीक्षण कर पण्डित जी को कहा, " आटे आदि का दाम आप से अधिक लिया गया है। ऐसा जान पड़ता है कि आपने भावों की पूछ–ताछ कुछ भी नहीं की। पदार्थ भी उत्तम कोटि के नहीं है। भाई, धन एक उपयोग की वस्तु है। यह बड़े परिश्रम से प्राप्त होता है, इसलिये एक पैसे के व्यय में भी सावधानी रहना चाहिए।

५– समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे – स्वामी जी समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे। उन्होंने दिन रात के सारे पल अपने लिये तो नियम के तार में पिरो ही रखे थे, परन्तु कर्मचारियों को भी व्यर्थ में समय बिताने नहीं देते थे। एक दिन उनके लेखक कार्य करने के लिए समय पर समुस्थित न हो सके। वे कोई आधा घण्टा देर करके काम पर आये। स्वामी जी ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा "हमारे देश के लोग समय का महत्व नहीं जानते।" नियम बद्ध कार्य करना इनके लिए दुष्कर कर्म है। प्रातः से सायं पर्यन्त इनके सारे काम अनियमित होते हैं। समय का व्यर्थ खोना इनकी अस्तव्यस्त अवस्था का एक भारी कारण है।

समय कितना मूल्यवान् हैं, इसका ज्ञान उस समय होता है, जब किसी का मरणासन्न प्रिय बन्धु शय्या पर पड़ा होता है और वैद्य आकर कहता है कि यदि पाँच पल पहले मुझे बुलाया होता तो मैं इसे मरने न देता। चाहे सहस्रो रूपये व्यय कर डालो, पर अब इसकी आँख नहीं खुल सकती।

६– गो रक्षा होना बहुत जरूरी है– स्वामी जी कुछ दिन शाहजहांपुर ठहरकर, लखनऊ होते हुए आश्विन सुदी १०सं० १८३६ को फर्रुखाबाद पधारे। इस बार स्वामी जी ने लाला कालिचरण के उद्यान में आसन लगाया। स्वामी जी यहाँ प्रतिदिन भाषण देते और सहस्रों मनुष्य सुनने आते। कलेक्टर आदि राजकर्मचारी भी सम्मिलित हुआ करते और अत्यन्त प्रसन्न होते। उनके भाषणों का प्रभाव वर्णनातीत होता था। एक भाषण में गो–रक्षा के लाभ वर्णन करते हुए स्वामी जी ने कहा " गो–हत्या से इतनी हानि हो रही है, परन्तु खेद है कि राजपुरुष इस पर कुछ भी ध्यान नहीं देते। यह दोष अधिक हमारा अपना है। हममें एकता का सर्वथा अभाव है। यदि मिलकर गौ–वध बन्द कराने का निवेदन करें, तो क्या नहीं हो सकता ? जो लोग गो–दान करते हैं वे भी हानि–लाभ को नहीं सोचते। भोले–भाले भाई समझ लेते है कि गौ–संकल्प करने से ही बैतरणी पार हो जायेंगे। वे वरना मान लेते हैं और गौ–पुरोहित देवता के आंगन में खूंटे से बन्धी रहती है। बहुत से ऐसे भी कुल–कपूत हैं जो तुरन्त उसे कसाई के हाथ बेच डालते हैं ।

७– दान समीपस्थ को पहले देना चाहिए – एक दिन, दान पर बोलते हुए स्वामी जी ने कहा "अन्न–जल का दान कोई भी भूखा–प्यासा मिले उसे दे देना चाहिए।" ऐसा दान पहले अपने दीन–दुःखी पड़ोसी को देना चाहिए। पास के रहने वाले का दरिद्र दूर करने में सच्ची अनुकम्पा और उदारता का प्रकाश होता है। इससे वाह–वाह नहीं मिलती, इसलिये अभिमान को भी अवकाश नहीं मिलता।

८. खण्डन क्यों करता हूँ – स्वामी जी ने एक दिन वर्णन किया " अनेक जन कहते हैं कि आपके खण्डन–परक व्याख्यानों से तो लोगों को घबराहट उत्पन्न हो जाती है। उनके ह्रदय भड़क उठते हैं, इसका परिणाम शुभ कैसे होगा। स्वामी जी ने कहा कि जैसे जब रोग दूर होने में नहीं आया करता तो अच्छे वैद्य लोग, देह के बड़े दोषों को शान्त करने और मल को बाहर निकालने के लिए बिरेचक औषधियाँ दिया करते हैं। बिरेचक औषध पहले पहल घबराहट उत्पन्न करती है। व्याकुलता लाती है। कभी–कभी उससे मुंह भी मचलाने लग जाता है। परन्तु जब विरेचन होकर कुपित दोष शान्त हो जाते हैं, तब प्रसन्नता होती है। धीरे–धीरे वास्तविक पुष्टि प्राप्त हो जाती है आर्य जाति में अनेक कुरीतियों के दोष और मिथ्या मन्तव्यों के मत बढ़ गये हैं। उनके कारण यह इतनी रूग्ण हो गई है कि लोग इसकी आयु को उंगलियों पर गिनने लगे हैं।

हमारे उपदेश आज विरेचक औषध की भांति, घबराहट अवश्य लाते हैं, परन्तु हैं वे जातीय शरीर के संशोधक और आरोग्य प्रद। वर्तमान आर्य सन्तान हमें चाहे जो कहे परन्तु भारत की भावी सन्तति हमारे धर्म सुधार को और हमारे जातीय संस्कार को अवश्यमेव महत्व की दृष्टि से देखेगी। हम लोगों की आत्मिक और मानसिक नीरोगिता के लिए जो कुरीतियों का खण्डन करते हैं, वह सब कुछ हित – भावना से किया जाता है।

–खुशहाल चन्द्र आर्य

आर्य समाज दढ़ियाल जनपद–अमरोहा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दढ़ियाल अमरोहा का वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 28 तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

www.thearyasamaj.org

''असावधान-आर्यों का समाज''

–विद्यावाचस्पति
वेदपाल वर्मा शास्त्री

श्री योगीराज अरविन्द घोष ने 'आर्य' पत्रिका के वोल्यूम आइ.पी. ६३ में ''आर्य शब्द पर लिखा है कि'' ''मानवीय भाषा में इससे उत्तम और कोई शब्द नहीं है।''

निरुकार यास्क '''आर्यः ईश्वरपुत्रः' अर्थात् आर्य ईश्वर पुत्र है ऐसा ६–२६–१ में कहते हैं। आर्यत्व का आधार वेद है। जब आर्य वेद नहीं पढ़ेंगे – तो आर्यसमाज स्वतः मर जायेगा।

सृष्टि के प्रारम्भ में हमें परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया। अरबों वर्षों से भी यह वेद ज्ञान इतना ही नवीन है जो अरबों वर्षों पूर्व था। जितना नवीन उस काल में था उतना ही नवीन आधुनिक जगत् में है, आने वाले समाज के लिये भी उतना ही नवीन है। ज्ञान वृद्ध नहीं होता। ज्ञान सदैव नम्र बना रहता है। नया बना रहता है।

राजा को यदि ब्रह्मज्ञान नहीं होगा, तो वह राष्ट्र को कदापि ऊँचा नहीं बना सकता। राजा का राजधर्म है कि वह घर–घर जाकर वेदज्ञान से राष्ट्र को पवित्र बनावे। राजा जितना तपा हुआ होगा–उतना ही प्रजा को सुख देने वाला होगा। हिंसा धर्म उपनाने वाले राजा के राष्ट्र में अन्धेरा छा जाता है। दुष्ट राजा अपनी संस्कृति से धर्म से स्नेह नहीं करता। वह अपने वंश के साथ, समय पाकर स्वयं नष्ट हो जाता है। वह अनाथ होता है। नास्तिक होता है। (२२–५–४५ अथर्व वेद)।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने कहा था – वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य भी वेद की रक्षा करना था और रक्षा करना ही है अकेले महर्षि ने विश्व में वेदों का नाम गुंजा रखा था। भारत में उत्पन्न हर प्राणी आर्य है– इसी से देश का नाम आर्यावर्त है। चतुर्थ वर्ण शूद्र भी आर्य है। वह अपने सेवाभाव के परिश्रम करने में हिमाकत नहीं मानता। अपनी अपरिहार्य सेवा से वह संसार का महान उपकार करता है। अपनी सेवा श्रद्धा को नीचे नहीं गिरने देता। मानव–सृष्टि के दुःखों को अपनी शारीरिक सेवा द्वारा दूर करने का बीड़ा उठाने वाला शूद्र नाम से जाना जाता है– किसी जाति विशेष का नाम शूद्र नहीं है। वह आर्य सेवक भी है। वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता, किसी से लड़ना वह नहीं जानता। नम्रता उसका प्रकार है। स्वभाव है।

अपने को आर्य या आर्यसमाजी कहाने वाले कितने हैं जो वेद पढ़ते हैं। वेद पढ़ना तो दूर वे वेदों का नाम तक भी नहीं जानते। वेद–शिक्षाहीन ऐसे लोग शूद्रों से बहुत नीचे रह जाते हैं। महर्षि ने शूद्रों–दलितों–हरिजनों–दुखियों और स्त्रियों को खूब उभारा है। उन्हें स्नेह दिया आदर दिया है। विधवाओं का मार्ग प्रशस्त कर उनका उत्थान किया है। वेद पढ़ने का, यज्ञ करने का अधिकार दिलाया है।

मैं देख रहा हूँ आज बहुत से आर्य समाजी यज्ञ कराने की ज्यादा से ज्यादा दक्षिणा का वचन पाकर ही यज्ञ कराने आते हैं। ब्रह्म पद पाकर अपने आपको वेद का महान् पण्डित होना जताते हैं, उन्हें यह जानकारी भी है कि यज्ञ का ब्रह्मचारी वेदों का पण्डित ब्राह्मण होता है। उन्हें ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'' की कोई विचारणीय चिन्ता नहीं है। केवल उनकी नजर मोटी दक्षिणा प्राप्त करने पर ही टिकी रहती है, वे ही आर्य समाज को निचोड़ रहे हैं। वैदिक आर्यधर्म अन्धेरे में जा रहा है। आर्य बन्धुओं के असावधान अज्ञान के कारण लोग वेदों का नाम भूलते जा रहे हैं। वे वेद के पढ़ने–पढ़ाने और सुनने–सुनाने पर जोर नहीं देते। वेद समाज में ओपरे–ओपरे से होते जा रहे हैं।

इसी कारण वैदिक सभ्यता–संस्कृति पर पुराणवादी पाखण्डी नास्तिक हावी होते जा रहे हैं। मूर्ति–पूजा घटने के बजाय प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन्होंने मूर्ति पूजा को अपने और अपने परिवार की रोजी रोटी का प्रबल व्यापार और धर्म स्तम्भ मान लिया है– प्रभु पूजा को छोड़ दिया है। वेद में कही भी मूर्ति पूजा का नाम नहीं है। यह सृष्टिकर्ता ईश्वर का बहुत बड़ा अपमान है। पिता का अपमान कर सन्तान कभी सुखी नहीं रह सकती है। मूर्ति पूजा से समाज कायर–कमजोर–भिखारी बनता जा रहा है। इससे समाज–जाति राष्ट्र–द्रोही बनती है। धर्म के प्रति इनका जरिया शून्य है। भिक्षावृत्ति इनका राष्ट्र है–धर्म है। तप और त्याग है। सामाजिक राजनैतिक लज्जा–हया का यहां नाम निशान नहीं। भिक्षावृत्ति इनकी कुशल कारीगरी है, इसी से ये नपुंसक जीवन से जीना ही अपनी वीरता व बहादुरी मानते हैं। स्वाभिमान इनका पाताल लोक में चला गया है। इन्होंने ही देश को धर्म निरपेक्षता के कांटों में उलझा रक्खा है। कहा हमारा हिमालय है? कहां मानसरोवर है? कहां तिब्बत लाहौर–करांची है? कहां सिन्धु दरिया बहता है? कहां खैबर–पख्तून है? जहां राष्ट्र धर्म नायक सीमान्तगांधी अब्दुल गफ्फार खां जीवन भर देश की आजादी के लिये ललकारते रहे। इन गांधीवादी धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने उस महामानव को पहाड़ों से नीचे नहीं आने दिया। सदा उसका अपमान करते रहे हैं। मैं इन दुर्भावनाओं से बहुत पीड़ित रहता था। गुरुकुलवास में ये कुत्सित राजनैतिक दुराग्रह मुझे कचोटते रहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का वचन है कि हर आर्य के सिर पर ''ऋषियों का ऋण'' है। इस ऋण से उऋण होने का एकमात्र उपाय यही है कि वेदमंत्रों का तथा आर्षग्रन्थों का अध्ययन करें और उनका प्रचार करें। अन्यथा ''आर्यत्व'' का कोई गौरव नहीं और ऋषि ऋण से उऋण होने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं है।

महर्षि ने आर्य समाज के तृतीय नियम में यही दिया है कि – ''वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। केवल धर्म नहीं–परम धर्म कहा है।'' यजुर्वेद ३४–५७ मंत्र में कहा है कि– परमात्मा ही वेद ज्ञान देता है, वही इसकी रक्षा करता है।

ईश्वर स्वयं स्पष्ट आदेश करता है ''मैं ही वेदों को रचता हूँ तथा मैं ही पूर्व कर्मानुसार धनादि फल का प्रदाता हूँ– १०–४६–१ ऋक्'' अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्।

अहं भुवं यजमानसा चोदिता यज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे।।१।।

अर्थात – मैं स्तुतिकर्ताओं को शाश्वत ऐश्वर्य, निवास योग्य लोक, मोक्ष तथा ज्ञान देता हूँ। मैं वेद को उत्पन्न करता हूँ। यह वेद मेरी ही महिमा को बढ़ाता है। यज्ञ–दान–सत्संग करने वाले को सन्मार्ग में आदेश करने वाला मैं ही हूँ। मैं कुसंगी – अज्ञाशील जनों को ही सारे युद्धों में पराजित करता हूँ।।१।।

''न यो ररे आर्यं नाम दस्यवे'' १०–४६–३। अर्थात् मैं विद्वानों के अज्ञान आवरण को हटाकर उन्हें ज्ञान देता हूँ। वेद मंत्रों के अभ्यासियों की रक्षा करता हूँ। मैं ही वह हूँ जो दुष्टों को कदापि आर्य की संज्ञा प्रदान नहीं करता।।३।।

अहं रन्धय मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक्।
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सख्याय षड्गृभिमरन्ध्यम्।। १०–४६–५ ऋग्वेद।।

अर्थात – मैं वेदोपदेश अनुगामी शिष्य आदि की विषय–वासनाओं की प्रवृत्ति को वश में करता हूँ जिससे वह स्वज्ञान तथा कर्मद्वारा सतत मेरी ओर ही आये। मैं अपनी ओर आने वाले की आत्मा को विनयशील बनाता हूँ तथा शिष्य के लाभार्थ उनमें गुरुजनों–मातापितरों के प्रति आस्था श्रद्धा का निर्माण करता हूँ।।५।।

इसीलिये महर्षि आदि ने भी वेदशास्त्र विश्व को अपौरुषेय महान् ग्रन्थ माना है।

''नास्ति वेदात्पर शास्त्र'' वेदज्ञान से बढ़कर प्राचीन कोई धर्म–ग्रन्थ संसार में नहीं है।

कथन विशेष – मुझे ज्यादातर ऐसे व्यक्ति मिले हैं, जो कहते हैं हम संस्कृत भाषा नहीं जानते – वेदों को कैसे पढ़ें ? इसी समाधान के लिये १२ वर्ष परिश्रम के साथ विद्वान सन्यासियों के संरक्षण में रहकर ''वेद में क्या और कहां ?'' मात्र १७३ पृष्ठ की चारों वेदों की सरल हिन्दी विषय सारिणी (इन्डैक्स) प्रकाशित किया है। जिसका मूल्य १५०/– बहुत कम रक्खा है। जिसे मीनाक्षी प्रकाशन – बेगम पुल– मेरठ– २५०००१ ने प्रकाशित किया है। फोन नं०–०१२१–२६४१८३३ है। लेखक : वेदपाल वर्मा शास्त्री हैं। इससे आप बड़ी आसानी से ऋग्वेद से पदार्थ विद्या के गुण–शिल्प विद्या का ज्ञान एवं प्रयोगविधि, यजुर्वेद से यज्ञ सम्बन्धी कर्मकाण्ड की विशेषता, सामवेद से संगीतविद्या के साथ उपासना विज्ञान एवं गान्धर्वविद्या अथर्ववेद से आत्मा–परमात्मा तथा प्रकृति सम्बन्धी ब्रह्मविद्या का पूर्णज्ञान एवं आयुर्वेद का अनुपम ज्ञान आदि–आदि जान लेंगे। आप में वेदों के प्रति एक विशेष रूचि और श्रद्धा उत्पन्न होगी। बेहद सरलता के साथ चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त कर आपकी आत्मा में एक विशेष सन्तोष उत्पन्न होगा।

मालदाबाग–पुरानी गुड़मण्डी
शाहपुर जनपद– मुजफ्फर
नगर (उ०प्र०) – २५१३१८
मोबा० – ९९२७५७५७७७

युग पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन–धर्म से भटके भारतीय संस्कृति से उपेक्षा करने वाले, नास्तिकता के गर्त में डूबे रहने वाले मद्यमांस, जुये आदि कुकृत्यों में लिप्त रहने वाले व्यक्तियों के लिए एक ज्योति स्तम्भ के रूप में प्रेरणा बनेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जालन्धर के तलवन गांव में सम्वत् १८६३ में हुआ था। उनके पिता नानक चंद शहर कोतवाल थे। पिता सम्पन्न थे, जिससे अपने प्रिय पुत्र मुंशीराम को पठन–पाठन के लिए सभी सुख–सुविधाएं प्रदान की थी।

स्वामी जी जिनका बचपन का नाम मुंशी राम था, वे अपने विद्यार्थी जीवन में अपने मित्रों के कुसंग से जुवा खेलना, शराब पीना, मांस खाना प्रारम्भ कर दिया था और यह उनके प्रारम्भिक जीवन का मुख्य अंग बन गया था। हिन्दू धर्म में छुआछूत और पाखण्डों के धारण धर्म और ईश्वर से उनका विश्वास उठ गया था। एक बार उन्होंने ईसाई बनने को सोचा। वपतिस्मा लेने के लिए पादरी साहब के घर पहुँचे। पर्दा पड़ा हुआ था। प्रतीक्षा के बाद जब पर्दा उठाया तो देखा कि पादरी साहब एक श्वेत वस्त्र धारिणी नव यौवना के साथ घृणित अवस्था में है बसा वापस लौट आये। धर्म से सर्वथा दूर हट गये। दैव योग से बरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का दिव्य स्वरूप और उनके व्याख्यान से उनके जीवन में महान परिवर्तन आया। मुंशीरामजी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मतमतान्तर का खण्डन और ईश्वर के सम्बन्ध में उनके विचारों के सन्निकट होते चले गये। स्वामी जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के गम्भीर अध्ययन से आर्य समाज के सक्रिय सदस्य बन गये। उन्होंने देखा कि भोले–भाले हिन्दू, इस्लाम के तबलीग और ईसाइयां के प्रचार से हिन्दू धर्म को छोड़कर मुसलमान और ईसाई बनते जा रहे हैं। हिन्दू धर्म को छोड़ने में कोई रोक नहीं थी, किन्तु किसी व्यक्ति का हिन्दू धर्म में आने के लिए सर्वथा प्रतिबन्ध था। एक बार कश्मीर नरेश के सामने कुछ मुसलमान भाइयों ने हिन्दू होने के लिए प्रस्ताव किया था। इसके विपरीत कश्मीर नरेश ने जब कश्मीरी पण्डितों से कहा कि हिन्दू धर्म में आने वालों के लिए अपने दरवाजे खोल दिये जायें तो उन्होंने स्पष्ट मना किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुंशीराम जी ने शुद्धि समाचार और सद्धर्म प्रचारक समाचार पत्र को निकालना प्रारम्भ कर दिया। इस पत्र के प्रभाव से जो हिन्दू भाई मुसलमान और इसाई बन गये थे वे विधर्मी व्यक्ति हिन्दू धर्म में धड़ाधड़ प्रवेश करने लगे। स्वामी जी के इस आन्दोलन में कालाकाँकर के राजा रामपाल सिंह आदि बन्धुओं ने स्वामी जी के इस कार्य में विशेष सहयोग दिया। कहते हैं कि स्वामी जी ने लगभग चौदह लाख बिछुड़े भाइयों एवं मतावलम्बियों को हिन्दू धर्म की दीक्षा प्रदान की। उनके बलिदान में शुद्धि भी एक कारण था। क्योंकि उनकी शुद्धि कराची की एक सम्भ्रान्त महिला असगरी बेगम की शुद्धि से धर्मान्ध मुसलमान बहुत चिढ़ गये थे। उन दिनों सारे देश में मैकाले की रीति नीति से खोले गये ईसाइयों के अंग्रेजी के स्कूल का काफी प्रचार था। इसमें पढ़ने वाले युवकों को ईसाई बनने की प्रेरणा दी जाती थी। इसके उत्तर में स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिसमें भारतीय संस्कृति की विशेष शिक्षा का प्रबन्ध था। इसमें पढ़कर संस्कृत के अनेक प्रकाण्ड विद्वान, साहित्यकार, वेदों के भाष्यकर्त्ता, पत्रकार, दार्शनिक विद्वान बने। इन विद्वानों में जय चन्द्र विद्यालंकार जयदेव विद्यालंकार, सत्यकेतु विद्यालंकार, सत्यकाम विद्यालंकार, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार और पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार आदि प्रमुख हैं। गुरूकुल ने आयुर्वेद का विशेष पठन–पाठन और आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण में सराहनीय कार्य किया। लगभग सभी नगरों में गुरूकुल फार्मेसी खोलकर आयुर्वेद के उन्नयन की दिशा में सराहनीय कार्य किया। यह आश्चर्य की बात है कि वहां हिन्दी और संस्कृत के माध्यम से ही सभी विषयों की उच्च कक्षाओं तक पढ़ाई की जाती रही है। स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। देश में जब रौलट ऐक्ट के विरूद्ध प्रबल आन्दोलन चलाया गया। तो उसमें स्वामी जी की विशेष भूमिका थी। दिल्ली की चांदनी चौक में एक विशाल सभा हुई जिसमें स्वामी जी, विशेष वक्ता के रूप में विद्यमान थे। इस आन्दोलन के सम्बन्ध में पांच सत्याग्रहियों की सिपाहियों की गोली से हत्या कर दी गई थी। इसके विरोध में अंग्रेजी सरकार इस सभा को नहीं चलने देना चाहती थी और कुछ अंग्रेजी अफसर और संगीनधारी पुलिस स्वामी के पास सभा में पहुंच गये। स्वामी जी ने कड़क कर कहा, ये बताइए कि पांच सत्याग्रियों की किसने हत्या की ? इसका उत्तर उन्होंने नहीं दिया और लपक करके पांच संगीनधारी स्वामी के पास पहुंच गये और चिल्ला कर कहा, हट जाओ, नहीं तो सगीनों से आपकी छाती छेद देंगे। स्वामी जी पीछे नहीं हटे बल्कि दो कदम आगे बढ़कर उच्च स्वर में छाती साने खोलकर कहा कि–"मार दो, मार दो।" पुलिस की संगीन स्वामी जी के शरीर को स्पर्श कर रही थी। उसी समय दौड़ता हुआ एक अंग्रेज अफसर आया। उसे देखकर पुलिस हट गई और चली गई। उसी समय दिल्ली के जामा मस्जिद में रौलट ऐक्ट के विरूद्ध एक विशाल सभा चल रही थी। उसमें से एक मौलवी ने चिल्लाकर कहा कि इस सभा में स्वामी श्रद्धानन्द की भी तकरीर होनी चाहिए। दो व्यक्ति जाकर स्वामी श्रद्धानन्द को ले आओ। स्वामी जी आये उनका व्याख्यान कराया गया। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान को वेद मंत्र से आरम्भ किया और शान्तिपाठ के साथ समाप्त किया। इस्लामी इतिहास में यह पहली घटना है। जब किसी गैर मुसलिम के किसी मस्जिद ने मिम्बर का व्याख्यान हुआ। स्वामी जी के ओजस्वी व्याख्यान का जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

सन् १९१६ में अमृतसर में कांग्रेस का वृहदधिवेशन होना था। पण्डित मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे। मोती लाल नेहरू ने स्वामी श्रद्धानन्द से स्वागताध्यक्ष बनने की प्रार्थना की और स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया। इस अधिवेशन में लोकमान्य तिलक, चितरंजनदास, विपिनचन्द पाल, पण्डित मोतीलाल और जवाहर लाल नेहरू, स्वरूप रानी नेहरू, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी नेहरू, कुमारी कृष्णा नेहरू और एनीबेसेन्ट आदि की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। सम्मेलन को सफल बनाने का सारा श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द को था। उन्होंने इसका बखूबी निर्वहन किया।

स्वामी जी इस भाग–दौड़ में गम्भीर रूप से निमोनिया के आक्रमण से कमजोर हो गये थे। डा० अन्सारी की दवा से वे स्वस्थ तो हो गये, लेकिन कमजोरी बनी रही। वे अपने मित्रों से कहा करते थे कि अब शरीर काम के लायक नहीं रह गया है। अब नये जीवन की आवश्यकता है। अन्ततः २३ दिसम्बर सन् १९२६ का वह दिन आ ही गया जिस दिन स्वामी जी का बलिदान होना था। कमजोरी के कारण डा० अन्सारी ने लोगों से मिलने जुलने पर रोक लगा दी थी। अचानक एक व्यक्ति जिसका नाम अब्दुल रशीद था, सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। लोगों ने उसे रोकना चाहा लेकिन वह ऊपर जाने को उतावला था। स्वामी जी ने कहा, मत रोको, भाई आने दो। वह स्वामी जी के पास पहुंच गया और पानी मांगा। अकेला पाकर, उसने स्वामी जी पर अपनी पिस्तौल से तीन गोलियाँ दाग दी। स्वामी जी ढेर हो गये। गोली की आवाज सुनकर धर्मपाल विद्यालंकार ने भरी पिस्तौल धारी युवक को जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर सवार हो गये। एक हाथ से हत्यारे के पिस्तौल वाला हाथ और दूसरे हाथ से उसका दूसरा हाथ तथा अपने छाती के भार से दबाए रखा। थोड़ी देर में पुलिस आई और हत्यारे को गिरफ्तार करके ले गई। आश्चर्य की बात है कि हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल सर्मथक स्वामी श्रद्धानन्द का एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा हत्या कर दी गई। प्रमाण स्वरूप उन दिनों गौहाटी में कांग्रेस का अधिवेशन होना था और स्वामी जी से उसमें पधारने की प्रार्थना की गई थी। रूग्णावस्था के कारण स्वामी जी ने अपना संदेश दिया था जो यह था – "भारत का भविष्य हिन्दू–मुस्लिम एकता पर आश्रित है"।

बलिदान के तीसरे दिन शनिवार को जब अर्थी का विशाल जुलूस निकला वह सम्राटों को भी रिझाने वाला था। दोपहर बाद यमुना के तट पर जुलूस पहुंचा और उनका संस्कार वैदिक ऋचाओं के मध्य सम्पन्न हुआ। इस अपार भीड़ में एक व्यक्ति ऐसा था, जो नंगे सिर और नंगे पैर चल रहा था। वह व्यक्ति और कोई नहीं डा० जाकिर हुसैन थे।

–राधेमोहन
इलाहाबाद

भूल सुधार

आर्य मित्र दिनांक १० दिसम्बर, २०१३ के सम्पादकीय की प्रथम पंक्ति में टंकण की भूल से 'विधान सभाओं के निर्वाचन परिणाम घोषित होने की तारीख ८ दिसम्बर, २०१३ के बजाय ८ सितम्बर, २०१३ छप गयी है। कृपया पाठक इसे सुधार लेंगे और भूल के लिए क्षमा करेंगे।

–सम्पादक

आर्य समाज के वार्षिक सम्मेलन एवं यज्ञ

28-29 अक्टूबर 2013 को आर्य समाज किला परीक्षितगढ़ मेरठ।

३०-३१ अक्टूबर २०१३ को आर्य समाज कर्णपुर माफी-हसनपुर।

३ नवम्बर २०१३ आर्य समाज जागृतिविहार मेरठ जिला-अमरोहा में ऋषि बलिदान दिवस मनाया गया।

– आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद का वार्षिक सम्मेलन ६-७-८ दिसम्बर २०१३ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें सामवेद पारायण यज्ञ का भी आयोजन हुआ एवं वेद कथा डा० वेदपाल जी मेरठ तथा आर्य भजनोपदेशक योगेशदत्त जी रहे कु० अंजलि आर्या का भी प्रभावशाली भजन एवं उपदेश रहा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती में ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया – मंत्री – सत्यवीर चौधरी, अन्तरंग सदस्य-आर्य प्र०सभा

आर्य समाज उपैड़ा-हापुड़ – ११ दिसम्बर २०१३ को-

आर्य समाज के सभी सदस्यों ने मिलकर बिजेन्द्रसिंह त्यागी उपप्रधान के गृह पर यज्ञ सम्पन्न किया एवं वेदप्रचार का कार्यक्रम हुआ मा० लोकेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि सम्मेलन भी शीघ्र होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस -

१. आर्य केन्द्रीय सभा गा० बाद ने २२ दिसम्बर २०१३ को सन्यास आश्रम दयानन्द नगर से शोभा यात्रा प्रारम्भ करके रामलीला मैदान में सभा की। पूरे जिले से बच्चे एवं आर्य प्रतिनिधियों की भारी भीड़ रही वक्ताओं में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गु०पूठ-ततारपुर – डा० ज्वलन्त कुमार जी अमेठी चन्द्रवेशजी, श्री माया प्रकाश त्यागी जी ओ.डी. गुप्ता एवं पंकज सिंह भाजपा नेता ने अपने विचार व्यक्त किये संयोजन प्रवीण आर्य मन्त्री ने किया।

२. २३ दिसम्बर को आर्य समाज मन्दिर हापुड़ में नगर भ्रमण कर शोभा यात्रा सम्पन्न हुई तत्पश्चात प्रतियोगिता का आयोजन हुआ और सभा का कार्यक्रम रखा गया सभा की अध्यक्षता ओम प्रकाश आर्य ने की वक्ता स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी रहे धर्मेन्द्रशास्त्री एवं सुन्दरलाल आर्य ने भी विचार रखें विजयी बच्चों को पुरस्कार दिये। गुरूकुल ततारपुर के छात्रों ने विशेष भाग लिया।

३. २४-२५ दिसम्बर को गुरूकुल पूठ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया जिसमें चतुर्वेदशतक यज्ञ किया गया अध्यक्षता भाकियू के राष्ट्रीय सचिव सत्यवीर चौधरी प्रधान आर्यसमाज लुहारी ने की। मुख्य अतिथि आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री दिल्ली रहे तथा आर्य भजनोंपदेशक भजनलाल आर्य तेजसिंह रामवीर तूफान श्रीराम आर्य ने भजन सुनाये। वक्ताओं में दिनेश खेड़ा चन्द्रपाल सिंह अमरोहा विकास आर्य हापुड़, कुंवरपाल सिंह हापुड़, आचार्य श्यामलाल जी शास्त्री, दिनेश आचार्य, रणधीर शास्त्री मेरठ, सन्तोष पाण्डेय धुमार मिल असमोली – शौदान सिंह आर्य मेरठ आदि-आदि ने अपने विचार व्यक्त किये और महेश आर्य बहादुरगढ़ ओ.पी. गौतम मा० राजनाथ सिंह जी गढ़मुक्तेश्वर ने शुभकामनायें व्यक्त की।

शोक समाचार

आर्य समाज सिकन्दरा राऊ जिला हाथरस के प्रधान श्री राधेश्याम गुप्त का दिनांक ६.१२.१३ को प्रातः १०:१५ बजे हृदयगति रूकने से निधन हो गया।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने उनके निधन के समाचार को सुनकर अपना हार्दिक दुःख प्रकट करते हुये प्रदेश के सभी आर्यो की ओर से परम पिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की सद्गति और दिवंगतात्मा के शोक संतप्त परिवार को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

गुरूकुल गौतम नगर नई दिल्ली में चतुर्वेद पारायण यज्ञ

केन्द्रीय राजधानी दिल्ली नगर में स्थित गुरूकुल गौतम नगर में प्रतिवर्ष की तरह २५ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया शुभारम्भ से समापन तक प्रत्येक रविवार में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए १ दिसम्बर में आर्य सम्मेलन ८ दिसम्बर में महिला सम्मेलन १५ दिसम्बर में स्नातक सम्मेलन तथा २१ दिसम्बर को गुरूकुल सम्मेलन २२ दिसम्बर में पूर्णाहुति एवं समापन सम्मेलन का आयोजन किया गया सम्मेलन सभी सफल हुए डॉ० श्री रघुवीर जी वेदालंकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुए पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के निर्देशन में आचार्य प्रियव्रत जी संयोजन करते रहे श्री ओम प्रकाश वर्मा एवं सत्यपाल जी पथिक के भजन एवं पं० धर्मपाल जी शास्त्री के प्रवचन प्रतिदिन हुए समापन सत्र में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी कुरूक्षेत्र स्वामी देवव्रत जी दिल्ली डा० धर्मेन्द्र जी शास्त्री एवं बलवीर सिंह जी डॉ० अशोक चौहान जी कुलपति की अध्यखता में वैदिक विद्वान डॉ० महावीर जी मीमांसक, श्री म० बेगराज जी – म० शोभाराम प्रेमी जी आर्य भजनो पदेशकों का विशेष सम्मान किया गया। ब्रह्मचारियें ने हकीकत राय का नाटक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया ६ ब्र० ने अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करके सुनाई। सत्य प्रकाश जी अग्रवाल पूरे समय यजमान रहे साधु सन्तों की भीड़ एवं जनता का अपूर्व उत्साह देखने योग्य था, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराते हैं आपके सात गुरूकुल ओर हैं वहाँ भी प्रतिवर्ष २ वेद से यज्ञ करवाते हैं इस प्रकार आपका समर्पणभाव आर्य समाज के कार्य को सुदृढ़ करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को साकार कर रहे हैं। परमात्मा से प्रार्थना है इसी प्रकार आर्य जनता का मार्ग दिर्शन करते हुए भावी पीढ़ी को तैयार करते रहे कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें स्वीकार करें।

आपका अपना ही – धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री

आर्यजगत् के मुख्य समाचार

१. विवाह संस्कार – आर्य ज्योति के सफल सम्पादक-व्याकरण-साहित्य के शिरोमणि आर्यजगत् के उदीयमान युवा विद्वान आचार्य रवीन्द्रशास्त्री स्नातक गुरूकुल पौन्धा देहरादून का २० नवम्बर २०१३ को सोंपरी-मवाना में वैदिक विवाह सम्पन्न हुआ आर्य मित्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

२. आर्यजगत् के प्रमाणिक वैयाकरण देवदत्त शर्मोपाध्याय गु०म०दि० ज्वालापुर के पूर्व आचार्य के दोहित्र डा० भुवनेश उपाध्याय लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ दिल्ली में बी०एड० विभाग के भागिनेय आर्यवीर दल हापुड़ के अधिष्ठाता श्री अनिरुद्ध आर्य का २६ नवम्बर को हापुड़ में पाणिग्रहण संस्कार हुआ हार्दिक बधाई।

३. आर्य समाज टीला-पथिक परिवार में वेद प्रकाश आर्य की पुत्री का विवाह संस्कार ८ दिसम्बर २०१३ को सम्पन्न हुआ हार्दिक बधाई।

४. आचार्य शिवकुमार जी गुरूकुल ततारपुर के पुत्र निशान्त आर्य का शुभ विवाह ६ दिसम्बर २०१३ को हुआ हार्दिक बधाई।

५. भगतसिंह आर्य सुपुत्र मुनेशकुमार आर्य – आर्य समाज ततारपुर का विवाह संस्कार १५ दि० २०१३ को सम्पन्न हुआ। बधाई।

६. आर्य समाज गढ़ी होशदारपुर जिला-हापुड़ के मंत्री मा० पवन कुमार आर्य श्रीमती जी श्वाति का विवाह संस्कार २५ दिसम्बर २०१३ को हुआ स्वाति के लिए बहुत-बहुत आशीर्वाद।

७. आर्यसमाज बछलौता हापुड़ के प्रधान एवं जिला सभा हापुड़ के वेद प्रचार अधिष्ठाता प्रधानाचार्य इण्टर कालेज श्री निरंजन सिंह आर्य की सुपुत्री ऋचाआर्या का विवाह संस्कार ११ दिसम्बर को हुआ। पुत्री को बहुत-बहुत आशीर्वाद।

पूर्व लोकायुक्त जस्टिस एससी वर्मा ने दिए सुझाव

लोग मानसिकता बदलें भ्रष्टाचार मिट जाएगा

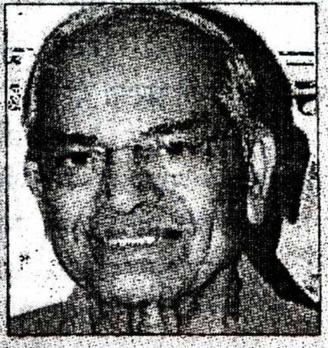

क्या दिल्ली की तरह यहां पर बदलाव नहीं हो सकता?

केजरीवाल कहां तक सफल होंगे यह तो नहीं कह सकता लेकिन जैसा आदर्श उन्होंने प्रस्तुत किया है वह 'आंख खोलने वाला' है। हमारे यहां आदर्श प्रस्तुत करने वालों की कमी है। यदि लोग आगे आकर सही रास्ते का चुनाव करें तो बदलाव तय है।

कानून होने के बाद भी भ्रष्टाचार पर क्यों नहीं लगती लगाम?

सरकारों के सिर्फ कानून बना देने से कुछ होने वाला नहीं है। जरूरत है उन पर सही ढंग से अमल करने की। जो कानून हैं वह भी कारगर हैं। कानून बनाना किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। भ्रष्टाचार तभी मिटेगा जब सरकार कड़ाई से कानून को क्रियान्वित कराएगी।

कैसे मिटेगा समाज से भ्रष्टाचार?

सबसे बड़ी बात है कि समाज से भ्रष्टाचार मिटाने के लिए पहल तो सरकार को ही करनी होगी। जब तक प्रशासन ठीक नहीं होगा कुछ भी ठीक नहीं हो सकता। चाहे वह सरकारी संस्थाएं हों या निजी, सबको अपना प्रशासन ठीक करना होगा। सारी समस्याओं का हल सुशासन है मगर भ्रष्टाचार इस कदर समाज के हर कोने में घर कर गया है कि इसे मिटाने की कहां से शुरुआत की जाए, यह भी बड़ा सवाल है।

भ्रष्टाचार मिटाने के लिए आम लोगों को क्या करना चाहिए?

जब तक लोग अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, भ्रष्टाचार नहीं मिट पाएगा। ऐसे में लोगों को सबसे पहले अपनी मानसिकता बदलनी होगी। हमें यह पहल करनी ही होगी कि हम खुद भ्रष्ट न हों। यह सत्य है कि जब हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा।

राजधानी में कब होगी आम आदमी की सरकार?

जब जनता अपने अधिकारों और जिम्मेदारी के प्रति ईमानदार हो जाएगी, जनता का शासन शुरू हो जाएगा। हमको यह शपथ लेनी होगी कि न हम घूस लेंगे और न देंगे। अपने हक के लिए लड़ेंगे न कि घूस के सहारे शॉर्ट कट अपनाएंगे।

(अमर उजाला से साभार)

नामकरण संस्कार पर हार्दिक बधाईयाँ

१. आर्यसमाज ततारपुर के सदस्य लल्लूसिंह आर्य के पौत्र का दिनांक २७ नवम्बर, १३ को नामकरण संस्कार हुआ जिसमें उसका नाम अथर्व आर्य रक्खा गया।

२. आर्यसमाज धनौरा–बु०शहर के सदस्य ऋषिपालसिंह आर्य के भानजे अरविन्द आर्य ने सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराया। गुरुकुलपूठ के ब्र० ने वेदपाठ किया एवं अरविन्द आचार्य जी के प्रवचन होते रहे। जनता पर प्रभाव पड़ा और पूर्णाहुति पर नामकरण संस्कार किया गया।

३. हापुड़ नगर के निकट धीरखेड़ा ग्राम में आर्यसमाज के कार्य को बढ़ाते हुए स्थापना की गई तथा २०–२१–२२ दि० २०१३ को वहाँ सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया श्री माया प्रकाश जी त्यागी का उद्‌बोधन हुआ श्री विवेक त्यागी एवं श्री सुरेश चन्द्र जी त्यागी का संयोजन प्रशंसनीय रहा। आचार्य ओमव्रत जी शास्त्री गुरुकुल पूठ एवं म० हरीशपाल जी आर्य भजनोपदेशक के भजन हुए वेदपाठ गुरूकुल बरनावा के ब्रह्मचारियों ने किया जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

४. आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर के तत्तावधान में एक सद्‌भावना सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रातःकाल यज्ञ एवं यज्ञ के पश्चात सम्मेलन हुआ सम्मेलन में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरुकुल पूठ एवं गुरूद्वारे के ज्ञानी जी गिरजाघर के पादरी एवं मुस्लिम समाज के मुल्ला मौलवी भी भारी संख्या में पधारे। मुनव्वर अहमद ने संयोजन किया तथा समाज में सद्‌भावना पैदा करने पर बल देते हुए परमात्मा के ही सब पुत्र है परिवार की तरह आपस में घृणा द्वेष छोड़कर प्यार से रहे ऐसा सभी ने स्वीकार किया। वेद के आदेश मैनुर्भव पर स्वामी जी का प्रभावशाली प्रवचन रहा।

आर्य समाज नोयडा का भव्य वार्षिकोत्सव

विभिन्न सम्मेलनों व श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के समारोह के साथ सम्पन्न

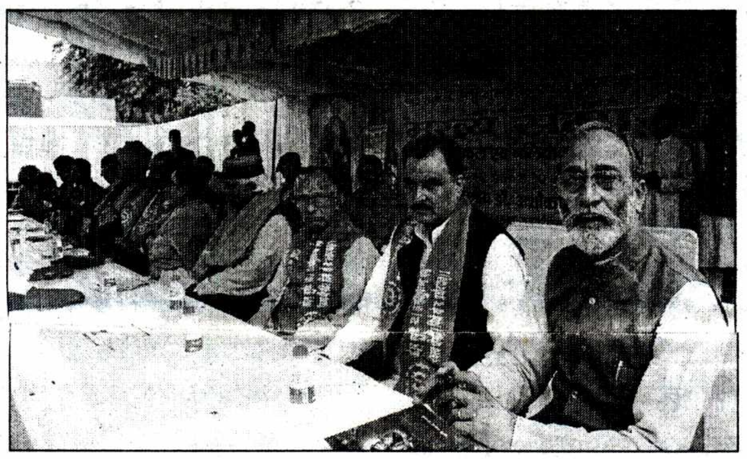

आर्य समाज आर्ष गुरूकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोयडा गौतम बुद्ध नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक १८ से २२ दिसम्बर, २०१३ तक बी–६६ सेक्टर ३३ नोयडा में ससमारोह सम्पन्न हुआ।

जिसमें दिनांक १८ से २१ दिसम्बर २०१३ तक नित्य प्रातः ७ से ६ बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ माता ओमवती गुप्त वानप्रस्थी के सौजन्य से और आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार प्राचार्य आर्ष गुरूकुल नोयडा के ब्रह्मात्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के अनन्तर श्री घनश्याम प्रेमी व भूपेन्द्र आर्य के भजन तथा डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई के प्रवचन हुये और सायं प्रतिदिन ७ से ६ बजे तक डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई की वेद कथा एवं श्री घनश्याम प्रेमी एवं भूपेन्द्र आर्य के भजन हुये।

सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी थे। मुख्य अतिथि श्री अनुराग ठाकुर अध्यक्ष अखिल भारतीय युवा मोर्चा भारतीय जनता पार्टी सचिव पी.सी.सी.आई. थे। मुख्य वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री डा. वीर पाल विद्यालंकार स्वामी विश्वानन्द स्वामी यज्ञमुनि थे। सभी विद्वानों ने भ्रष्टाचार मुक्त देश बनाने के लिए वैदिक जीवन दर्शन अपनाने पर जोर दिया। कार्यक्रम के संयोजक आचार्य जयेन्द्र कुमार थे। २१ दिसम्बर को द्वितीय सत्र ३ से ५:३० बजे तक महिला सम्मेलन के रूप में हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती सुधा सावन्त ने की मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला चौहान विशिष्ट अतिथि श्रीमती उमा शर्मा (कैलाश अस्पताल) श्रीमती सरोज अग्निहोत्री और मुख्य वक्ता श्रीमती कल्पना आर्य, श्री सोम देव शास्त्री, श्रीमती संध्या शर्मा स्वामी यज्ञ मुनि थे। भजन श्री घनश्याम प्रेमी के हुये सभी वक्ताओं ने राष्ट्रीयउत्थान के लिए महिलाओं के योगदान को अत्यन्त आवश्यक बताया।

तृतीय सत्र सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन सायं ६:३० बजे से रात्रि ६ बजे तक सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता स्वामी यज्ञमुनि ने की। मुख्य वक्ता श्री सोमदेव शास्त्री एवं स्वामी विश्वानन्द थे सभी ने जन जन को सत्यासत्य का विवेचन करने मानव जीवन को विश्व कल्याण के लिए समर्पित करके ज्ञान प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के नित्य स्वाध्याय का सन्देश दिया। सभी ने कहा महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को लिखकर सम्पूर्ण मानवजाति को जागृत करके संगठित रूप में ढोंग पाखण्ड जाति वर्ग भेद रहित राष्ट्र बनाने के लिए हमें अमूल्य निधि दी है।

शान्तियज्ञ एवं शोक श्रद्धांजलि कार्यक्रम

आर्यमित्र परिवार एवं आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा तथा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती अपनी शोक संवेदना प्रेषित करते हुए दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं तथा परिवार में धैर्यधारण करने की प्रार्थना प्रभु से करते हैं –

१. वेदप्रकाश आर्य सुपुत्र देवेन्द्र प्रकाश आर्य स्याना बु०शहर १४ नवम्बर २०१३
२. शोवीर सिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज ढ़ाना–हापुड़ के पिताजी १५ नवम्बर २०१३
३. ऋषिपाल सिंह आर्य के सुपौत्र – आर्य समाज खैय्या दतियाना–हापुड़ १७ दिसम्बर २०१३
४. चौ० भगवन्तसिंह आर्य पूर्व उपप्रधान–आर्य समाज ततारपुर–हापुड़ २२ दिसम्बर २०१३
५. वीरेन्द्र सिंह आर्य–प्रधान आर्य समाज नवादा बक्सर–हापुड़ के पिता जी चौ० अभय सिंह आर्य २३ दिसम्बर २०१३
६. आचार्य बुद्धदेव जी प्राचार्य–गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़– १० दिसम्बर २०१३

सद् संकल्प हमारा

कृण्वंतो विश्वं आर्यम् का लक्ष्य सजाऐ मन में।
संकल्पित हो उसे प्राप्ति हित उतरे कर्मांगण में।।

अनार्यत्व–असुरत्व मिटा देवत्व करेंगें मण्डित।
सूर्य पुत्र हम श्रुतिद्युतिभय आर्यत्व करेंगे विकसित।।
जब तक सद् संकल्प हमारा पूर्ण न कर पाऐंगे।
नहीं रूकेंगे, नहीं झुकेंगे बढ़ते ही जाऐंगे।

जब तक छाया है अज्ञान अविद्या का अंधियारा।
रूढ़िवादिता के कुचक्र में उलझी शुचिता धारा।।
भाव, कर्म, चिंतन, चरित्र पर पड़ी दनुजता भारी।
भटक रहा पुरुषार्थ मनुज का, दिशाहीनता जारी।।

जब तक सद् श्रुतिपथ भटकों को हम नहि दे पायेंगे।
नहीं रूकेंगे नहीं झुकेंगे, बढ़ते ही जाऐंगे।।

जाति, पंथ, मत, सम्प्रदाय से ग्रसित आज मानवता।
टूट रहा मानव–मानव से अपने पन का रिश्ता।।
स्वार्थ वृत्ति का जटिल जाल भ्रष्टाचारी तारों का।
जकड़ रहा सदवृत्ति–सुरत्व, श्रुति संस्कृति की शुचिता।।

जब तक मनु भवः को हम चरितार्थ न कर पाऐंगे।
ले पाखंड खण्डिनी दूरितों से लड़ते जाऐगे।।

श्रुति सविता की स्वस्ति–शान्ति कर किरणें विश्व गगन में।
पाप, ताप, तम–तमस विनाशक फैलेंगी त्रिभुवन में ।।
निश्चय ही हम सबका ये संकल्प प्रमाणित होगा।
कृण्वंतो विश्वम् आर्यम् का युग अनु प्राणित होगा।।

दयानन्द के मनस पुत्र हम तब तक नहीं रूकेंगे।
स्वर्णिम् वैदिक युग की हम पदचाप नहीं सुनलेंगे।।

–दयाशंकर गोयल

कुम्भ मेला–इलाहाबाद

आइए, एक माह के वानप्रस्थ आश्रम में

यह सर्वविदित है कि प्रयाग का कुम्भ मेला विश्व प्रसिद्ध है और आध्यात्म के नाम पर रजोगुणी वैभव व विचारों का प्रदर्शन परम्परा से होता चला आ रहा है। सम्भवतः इसी कारण से आर्य समाज सदैव से भारत वर्ष में लगने वाले कुम्भ मेलों व माघ मेले से दूर रहता है तथा इस प्रकार के आयोजनों/मेलों को पाखण्ड मानता है, किन्तु प्रयाग में विगत कई वर्षों से आर्य उपप्रतिनिधि सभा (जिला सभा) अपने स्तर पर वेद प्रचार करती आ रही है। इस वर्ष आर्य उप प्रतिनिधि सभा की नव निर्वाचित कार्यकारिणी ने यह निर्णय लिया है कि परम्परा से हट कर आर्य समाज के मंतव्य "जप–उपासना–धर्म व मोक्ष" को सिद्ध करने के लिए एक माह का वानप्रस्थिय साधना शिविर लगाया जाये।

आचार्य श्री दिनेश शास्त्री जी के नेतृत्व में सभी साधकों को संस्कृत भाषा का न्यूनतम ज्ञान देने तथा वेद मंत्रों का शुद्ध उच्चारण करना सिखायेंगे।

हम आर्य समाज के आदरणीय सन्यासियों व विद्वानों से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि माघ मेले को पाखण्ड समझने के बजाय इस अवसर का सदुपयोग करें, हम आप सभी को सादर आमंत्रित करते हैं। यहां पर आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी।

जो भी बन्धु एक माह रह कर साधना करना चाहते हों, उनसे विनम्र अनुरोध है कि हमें १४ जनवरी, २०१४ तक सूचित कर दें जिससे कि समुचित व्यवस्था हो सके।

दान दाताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि सात्विक दान देकर इस कार्य–योजना के सफल भागीदार बनें।

चेक/ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा (जिला सभा) के नाम भेजने का कष्ट करें।

प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
इं.विजयानन्द सिन्हा	अजेय कुमार मेहरोत्रा	राजेन्द्र कपू
09336465156	09305990143	09889482489

आर्य उप प्रतिनिधि सभा (जिला सभा) प्रयाग
कार्यालय–आर्य समाज (चौक) भवन, रूपबानी सिनेमा वाली गली, इलाहाबाद–२११००३

माघ मेले में भूमि स्थल–कालीसड़क पर बांध से उतरते ही बायें पट्टी पर पहला शिविर

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२–२२८६३२८
प्रधान–०६४१२६७८५७१, मंत्री–०६८३७४०२१६२, सम्पादक–६५३२७४६६००
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

....

अमर शहीदों का पावन स्मरण

काकोरी केस के अमर शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल अशफाकउल्ला खां का बलिदान १६ दिसम्बर, १६२७ को हुआ था। उनकी स्मृति में आर्य समाज शहर मुजफ्फर नगर में दिनांक १६ दिसम्बर को एक वृहद् स्मृति सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन वृहद् देवयज्ञ से हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य नेता स्वामी अग्निवेश जी, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र., श्री कस्तूर सिंह स्नेही करन सिंह स्नेही आदि ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुये कहा कि देश की आजादी और अखण्डता के लिए पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, हसरत वारसी, डा. रोशन सिंह ने आज के दिन वर्ष १६२७ में फांसी पर झूलकर अपना बलिदान दिया था। उनके बलिदान का स्मरण करके हम सभी मुजफ्फर नगर जिले मे दो सम्प्रदायों के बीच में उपजी विभेद की खाई को दूर करके एकत्व और समत्व भाव स्थापन का संकल्प लें। विभेद की विभीषिका का पूरी तरह शमन करने का व्रत लें।

'सांझी शहादत-सांझी विरासत' का आयोजन हुआ

☐ देश व समाज की उन्नति के लिए सभी को साथ मिलकर चलना होगाः स्वामी अग्निवेश

मुजफ्फरनगर। आज 'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं जिला मुजफ्फरनगर

❖ देश को बांटने वाली ताकतों से लोहा लेना होगाः हरिओम पंवार

आर्य समाज के तत्वावधान में पं. राम प्रसाद बिस्मिल एवं अमर शहीद अशफाक उल्ला खान का बलिदान समारोह के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम 'सांझी शहादत, सांझी विरासत' का संयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा ने किया एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथियों में ओजस्वी कवि हरिओम पंवार, सर्वधर्म के संयोजक मनु सिंह, शान्ता प्रकाश शास्त्री, ओम प्रकाश गुप्ता, प्रधान आर्य समाज मुजफ्फरनगर, कस्तूर सिंह स्नेही मन्त्री

आर्य समाज, विजय गुप्ता उपाध्यक्ष आर्य समाज, ठाकुर ओमपाल आर्य, राजेश्वर आर्य, पदम सिंह आर्य, मोहम्मद ताजिम, पं. राजपाल आर्य, मोहम्मद अब्बास, मास्टर विजय सिंह एवं जिला पंचायत मेम्बर नौशाद आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने अपने क्रान्तिकारी उद्‌बोधन में कहा कि मुजफ्फरनगर की तत्कालिक पृष्ठभूमि को देखते हुए आज पं. राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खान की मैत्री एवं देशभक्ति और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं, जब पूरे देश में और खासकर इस क्षेत्र में विषैली ताकतें हम सबको धर्म एवं मत के आधार पर न केवल विभाजित कर रही हैं, अपितु एक दूसरे के लहू का प्यासा भी बना रही हैं। आगे उन्होंने कहा कि आज सबको अपनी संकीर्णता को त्यागकर देश की उन्नति में साथ मिलकर भागीदारी करनी चाहिए और यही पं. राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खान को असल रूप में श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर ओजस्वी कवि हरिओम पंवार ने अपनी भावात्मक एवं काव्यमय श्रद्धांजलि बिस्मिल एवं अशफाक को देते हुए देश की करूणाई को ललकारा और देश को बांटने वाली ताकतों से लोहा लेने की प्रेरणा दी अन्य वक्ताओं ने भी काकोरी कांड के महान शहीदों को श्रद्धांजलि प्रदान की एवं प्रदेश में फैले पैशाचिक दंगों एवं बांटने वाली विषैली राजनीति का विरोध किया।

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धान्जलि समारोह

आर्य समाज खेड़ा–गढ़मुक्तेश्वर के तत्वावधान में श्री शौदान सिंह जी की आत्मा की सद्‌गति एवं परिवार की मनः शान्ति के लिए शान्ति यज्ञ किया गया। आकाश चौ० एवं विकास आर्य यजमान के रूप में रहे आचार्य अरविन्द जी गुरूकुलपूठ ने यज्ञ सम्पन्न कराया। २८.११. २०१३ को श्रद्धान्जलि सभा का आयोजन हुआ। जिसमें इफ्को निदेशक चौ० शीशपाल सिंह जी, श्री महावीर सिंह पूर्व प्रधानाचार्य सिम्भावली, श्री दिनेश आर्य खेड़ा अध्यक्ष भा.कि.यू. मण्डल मेरठ श्री राजपाल सिंह प्रधान सिम्भावली, श्री इन्द्रपाल सिंह प्रधान ग्राम सभा खेड़ा, चौ० सतवीर सिंह राष्ट्रीय महासचिव भा.कि.यू. लुहारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे आस पास के ग्रामों के आर्यों ने भी भाग लेकर अपनी श्रद्धान्जली अर्पित की। आचार्य जी के प्रवचन का आर्य जनता पर बहुत लाभ हुआ और सामाजिक कुरीतियां छोड़ने का व्रत लिया। वेद पाठ गुरूकुल पूठ के ब्रह्मचारियों ने किया।

निर्वाचन

आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ

प्रधान	:	श्री रूप चन्द्र दीपक
मंत्री	:	श्री राकेश महाना
कोषाध्यक्ष	:	श्रीमती आशा मेहता

आर्य समाज अनपरा (सोनभद्र)

प्रधान	:	श्री योगेश कुमार गुप्त
मंत्री	:	श्री बी.वी. सिंह
कोषाध्यक्ष	:	श्री सुभाष चन्द्र सिंह

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद

प्रधान	:	ई. विजयानन्द सिन्हा
मंत्री	:	श्री अजय कुमार मेहरोत्रा
कोषाध्यक्ष	:	श्री राजेन्द्र कपूर

शोक संवेदना

आर्य समाज पाथौली सरधना जि. मेरठ के प्रधान ओमवीर सिंह जी आर्य की माता श्रीमती शान्ति देवी जी का ८५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया आर्य समाज ने मिलकर ६ दिसम्बर को शान्तियज्ञ सम्पन्न किया। यह परिवार आर्य परिवार है। ओमवीर सिंह के छोटे भाई भी आर्य समाज गंगानर मेरठ के मन्त्री रहे हैं वर्तमान में संयोजक हैं। आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति तथा दिवंगत आत्मा के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता है। सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने भी अपनी शोक सवेदना व्यक्त की हैं।

–धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
आर्य प्रतिलिनिध सभा उ.प्र., गुरूकुल पूठ, हापुड़

शोक सम्वेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यालय अधीक्षक श्री सियाराम वर्मा के पूज्य पिता श्री महादीन प्रसाद वर्मा आयु ६३ वर्ष का सड़क दुर्घटना मे (सफेदाबाद, बाराबंकी) में दिनांक १७.१२.२०१३ को निधन हो गया।

उनकी स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्री कृष्ण मुरारी लाल यादव, श्री भुवन चन्द्र पाठक, आचार्य वेदव्रत अवस्थी, श्री शिवदेव सिंह बेधड़क, श्री शिव कुमार कौशल, डॉ. बी.पी. आर्य ने अपनी अपनी सम्वेदना व्यक्त की और परमपिता परमेश्वर से दिवंगतात्मा की सद्‌गति एवं दुखी परिजनों की मनःशान्ति व धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गयी। सभा प्रधान जी ने सूचना सुनते ही टेलीफोन द्वारा शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना दी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के ३५वें वार्षिकोत्सव पर अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय युवक आर्य परिषद् ने अपने ३५वें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर दिनांक २४ से २६ जनवरी, २०१४ तक रामलीला मैदान पी.यू. ब्लाक पीतमपुरा दिल्ली, निकट–कोहार एनक्लेव मैट्रो स्टेशन में २५१ कुण्डीय विश्व शान्ति महा यज्ञ एवं अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया है। जिसमें नित्य वृहद् यज्ञ एवं विविध सम्मेलनों के माध्यम से जन जागृति उत्पन्न कराने का उपक्रम होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के अनेक प्रसिद्ध विद्वान व राजनेता भाग लेंगे। २४ जनवरी को प्रातः १० बजे से विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी।

–अनिल आर्य,
राष्ट्रीय अध्यक्ष

आर्य समाज कायमगंज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज एवं स्त्री आर्य समाज कायमगंज फर्रूखाबाद का १३४वां वार्षिकोत्सव दिनांक २२ से २५ दिसम्बर, २०१३ तक ससमारोह सम्पन्न हुआ। उत्सव में नित्य प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ भजन प्रवचन, मध्याह्‌न २ बजे से ५ बजे तक विभिन्न सम्मेलन रात्रि ७ से १० बजे तक भजन व प्रवचनों का कार्यक्रम चला। उत्सव में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान व भजनोपदेशक, स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती श्री सोमदेव शास्त्री मुम्बई, श्री कृष्णपाल सिंह अजमेर, श्री कुलदीप कुमार भजनोपदेशक बिजनौर, श्रीमती कविता आर्य संगीता चार्य बिजनौर, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री फर्रूखाबाद ने आर्य समाज की उपयोगिता एवं वैदिक धर्म के महत्व को अपने भजनो व प्रवचनों में समझाया। जिसका श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

–केशव चन्द्र आर्य, मंत्री

काकोरी केस के अमर शहीदों की पुण्य स्मृति

आर्य उप प्रतिनिधि सभा अमरोहा ने दिनांक १५ दिसम्बर को प्रातः ८:३० बजे से आर्य समाज मन्दिर कांठ मुरादाबाद एवं १ बजे दोपहर से जवाहर नवोदय विद्यालय बसेड़ातगा अमरोहा में राष्ट्रभृत यज्ञ के आयोजन के साथ काकोरी केस के अमर शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, हसरत वारसी डॉ. रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी का देश की आजादी के लिए अपना बलिदान देने के लिए श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया और उनके प्रति श्रद्धासुमन भेंट किये गये।

–अशोक कुमार आर्य

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।